CHETANA
International Journal of Education (CIJE)

Peer Reviewed/Refereed Journal
ISSN : 2455-8279 (E)/2231-3613 (P)

Impact Factor
SJIF 2026-8.584

Prof. A.P. Sharma
Founder Editor, CIJE
(25.12.1932 - 09.01.2019)

# विद्यार्थियों के नैतिक मूल्यों का उनकी समायोजन क्षमता पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन

गुलशन सैनी
*बी.एड. एम.एड. छात्रा*
डॉ मुकेश कुमारी
*असोसिएट प्रोफेसर*
*बियानी गर्ल्स बी.एड. कॉलेज, जयपुर*
*Email : gulshansaini9053@gmail.com, Mobile- 9053522175*

*First draft received: 18.04.2026, Reviewed: 22.04.2026*
*Final proof received: 15.05.2026, Accepted: 23.06.2026*

**सार-संक्षेप**

*वर्तमान समय में शिक्षा का उद्देश्य केवल बौद्धिक विकास तक सीमित नहीं है, बल्कि विद्यार्थियों के नैतिक, सामाजिक एवं भावनात्मक विकास को भी सुनिश्चित करना है। नैतिक मूल्य व्यक्ति के व्यवहार को दिशा प्रदान करते हैं, वहीं समायोजन क्षमता उसे विभिन्न परिस्थितियों में संतुलित रहने में सहायता करती है। वर्तमान समय में विद्यार्थियों के व्यक्तित्व विकास में नैतिक मूल्यों एवं समायोजन क्षमता का महत्वपूर्ण स्थान है। इस अध्ययन में वर्णनात्मक शोध पद्धति का प्रयोग किया गया है।*

*यह शोध विद्यार्थियों के नैतिक मूल्यों का उनकी समायोजन क्षमता पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन करने हेतु किया गया है। वर्तमान समय में विद्यार्थियों के समग्र विकास में नैतिक मूल्यों एवं समायोजन क्षमता की महत्वपूर्ण भूमिका है। इस अध्ययन में 200 विद्यार्थियों (100 ग्रामीण एवं 100 शहरी) को नमूना के रूप में चयनित किया गया। डेटा संग्रह के लिए स्वनिर्मित प्रश्नावली का उपयोग किया गया, जिसमें नैतिक मूल्यों एवं समायोजन क्षमता से संबंधित 30 प्रश्न शामिल थे। प्राप्त आंकड़ों का विश्लेषण सांख्यिकीय विधियों माध्य (Mean), मानक विचलन (SD) एवं t-परीक्षण द्वारा किया गया।*

*अध्ययन के परिणामों से ज्ञात हुआ कि नैतिक मूल्यों का समायोजन क्षमता पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है अर्थात जिन विद्यार्थियों के नैतिक मूल्य उच्च होते हैं, उनकी समायोजन क्षमता भी बेहतर होती है तथा शहरी एवं ग्रामीण विद्यार्थियों में आंशिक अंतर पाया गया।*

**मुख्य शब्दः** *नैतिक मूल्य, समायोजन क्षमता, ग्रामीण विद्यार्थी, शहरी विद्यार्थी, माध्यमिक स्तर.*

## प्रस्तावना

शिक्षा मानव जीवन का एक महत्वपूर्ण अंग है, जो व्यक्ति के सर्वांगीण विकास में सहायक होती है। वर्तमान युग में शिक्षा का उद्देश्य केवल ज्ञान प्रदान करना नहीं है, बल्कि विद्यार्थियों में नैतिक मूल्यों, सामाजिक उत्तरदायित्व एवं भावनात्मक संतुलन का विकास करना भी है।

शिक्षा का उद्देश्य केवल ज्ञान प्रदान करना नहीं, बल्कि विद्यार्थियों के व्यक्तित्व का समग्र विकास करना है। नैतिक मूल्य व्यक्ति के व्यवहार, विचार एवं आचरण को दिशा प्रदान करते हैं। वहीं समायोजन क्षमता वह योग्यता है जिसके द्वारा व्यक्ति विभिन्न परिस्थितियों में संतुलन स्थापित करता है।

वर्तमान सामाजिक परिवर्तनों के कारण विद्यार्थियों में तनाव, प्रतिस्पर्धा एवं असंतुलन की स्थिति उत्पन्न हो रही है। ऐसी स्थिति में नैतिक मूल्यों का विकास अत्यंत आवश्यक हो जाता है, जिससे विद्यार्थी अपने व्यवहार को संतुलित कर सकें।

नैतिक मूल्य जैसे सत्य, ईमानदारी, सहानुभूति एवं अनुशासन विद्यार्थियों के व्यवहार को सकारात्मक दिशा प्रदान करते हैं। समायोजन क्षमता के विकास में भी इन मूल्यों की महत्वपूर्ण भूमिका होती है।

ग्रामीण एवं शहरी परिवेश में रहने वाले विद्यार्थियों के अनुभव, परिवेश एवं सामाजिक परिस्थितियाँ भिन्न होती हैं, जिसके कारण उनके नैतिक मूल्यों एवं समायोजन क्षमता में अंतर देखने को मिलता है। ग्रामीण क्षेत्रों में पारंपरिक मूल्य अधिक प्रचलित होते हैं, जबकि शहरी क्षेत्रों में आधुनिकता का प्रभाव अधिक होता है। इस कारण दोनों वर्गों के विद्यार्थियों में नैतिक मूल्यों एवं समायोजन क्षमता में अंतर देखने को मिल सकता है। यह अध्ययन इस बात की जांच करता है कि किस प्रकार नैतिक मूल्य विद्यार्थियों की समायोजन क्षमता को प्रभावित करते हैं तथा शहरी एवं ग्रामीण विद्यार्थियों में इसमें किस प्रकार का अंतर पाया जाता है।

### Need and Importance of Study (अध्ययन की आवश्यकता एवं महत्व)

वर्तमान समय में विद्यार्थियों में नैतिक मूल्यों का ह्रास देखा जा रहा है, जिसके कारण समायोजन संबंधी समस्याएँ बढ़ रही हैं।

इस अध्ययन की आवश्यकता निम्नलिखित कारणों से है—

1. विद्यार्थियों में नैतिक मूल्यों के महत्व को समझना।

2. समायोजन क्षमता के विकास में नैतिक मूल्यों की भूमिका को स्पष्ट करना।

3. शहरी एवं ग्रामीण विद्यार्थियों के बीच अंतर को पहचानना।

4. शिक्षा प्रणाली में सुधार हेतु सुझाव प्रदान करना।

### संबंधित साहित्य (Related Literature)

- **शर्मा (2018)** ने विद्यार्थियों के नैतिक मूल्यों एवं उनके व्यवहार प्रबंधन के संबंध में अध्ययन किया। शोध का उद्देश्य विद्यार्थियों के नैतिक मूल्यों के स्तर का अध्ययन करना तथा उनके व्यवहार पर उसके प्रभाव को ज्ञात करना था। परिणामों से यह स्पष्ट हुआ कि उच्च नैतिक मूल्यों वाले विद्यार्थियों का व्यवहार अधिक संतुलित एवं अनुशासित पाया गया

- **वर्मा (2019)** ने शैक्षिक मनोविज्ञान के अंतर्गत विद्यार्थियों की समायोजन क्षमता का अध्ययन किया। शोध का उद्देश्य विभिन्न परिस्थितियों में विद्यार्थियों की समायोजन क्षमता का विश्लेषण करना था। परिणामों से ज्ञात हुआ कि जिन विद्यार्थियों की मानसिक स्थिति संतुलित होती है, उनकी समायोजन क्षमता अधिक होती है।

- **गुप्ता (2020)** ने समायोजन क्षमता एवं उसके शैक्षिक उपयोग पर अध्ययन किया। शोध का उद्देश्य विद्यार्थियों की समायोजन क्षमता एवं उनके शैक्षणिक प्रदर्शन के मध्य संबंध ज्ञात करना था। परिणामों से यह स्पष्ट हुआ कि उच्च समायोजन क्षमता वाले विद्यार्थी अध्ययन में अधिक सफल होते हैं।

- **मिश्रा (2017)** ने किशोरावस्था में नैतिक विकास का अध्ययन किया। शोध का उद्देश्य किशोरों में नैतिक मूल्यों के विकास का स्तर ज्ञात करना था। परिणामों से यह पाया गया कि पारिवारिक एवं सामाजिक वातावरण का नैतिक मूल्यों के विकास पर महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ता है।

▪ **चौधरी (2021)** ने व्यवहार संशोधन एवं समायोजन तकनीकों पर अध्ययन किया। शोध का उद्देश्य विद्यार्थियों के व्यवहार में सुधार लाने एवं उनकी समायोजन क्षमता को विकसित करने के उपायों का अध्ययन करना था। परिणामों से यह स्पष्ट हुआ कि उचित मार्गदर्शन एवं प्रशिक्षण से समायोजन क्षमता को बढ़ाया जा सकता है।

**साहित्य विवेचना**

उपरोक्त संबंधित साहित्य के अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि नैतिक मूल्य एवं समायोजन क्षमता दोनों ही विद्यार्थियों के व्यक्तित्व विकास के महत्वपूर्ण घटक हैं। विभिन्न शोधकर्ताओं द्वारा किए गए अध्ययनों में यह पाया गया है कि नैतिक मूल्यों का विद्यार्थियों के व्यवहार, निर्णय क्षमता एवं सामाजिक अनुकूलन पर प्रत्यक्ष प्रभाव पड़ता है।

शर्मा (2018) के अध्ययन से यह स्पष्ट हुआ कि उच्च नैतिक मूल्यों वाले विद्यार्थियों का व्यवहार अधिक संतुलित एवं अनुशासित होता है, जिससे उनकी समायोजन क्षमता भी बेहतर होती है।

वर्मा (2019) ने बताया कि मानसिक संतुलन एवं शैक्षिक वातावरण विद्यार्थियों की समायोजन क्षमता को प्रभावित करते हैं।

गुप्ता (2020) के अध्ययन में यह पाया गया कि समायोजन क्षमता का शैक्षणिक उपलब्धि से भी संबंध है, जिससे यह सिद्ध होता है कि समायोजन केवल सामाजिक ही नहीं बल्कि शैक्षिक सफलता में भी सहायक है।

मिश्रा (2017) ने यह स्पष्ट किया कि पारिवारिक एवं सामाजिक वातावरण नैतिक मूल्यों के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है, जो आगे चलकर समायोजन क्षमता को प्रभावित करता है।

आधुनिक शोधों में भी यह पाया गया है कि नैतिकता और समायोजन के बीच सकारात्मक संबंध होता है। उदाहरण के लिए, एक अध्ययन में पाया गया कि नैतिकता और समायोजन के बीच महत्वपूर्ण धनात्मक संबंध होता है। इसी प्रकार अन्य शोधों में यह भी स्पष्ट हुआ कि समायोजन क्षमता और नैतिकता एक-दूसरे को प्रभावित करते हैं तथा दोनों का संयुक्त प्रभाव विद्यार्थियों के व्यवहार पर पड़ता है ।

इसके अतिरिक्त यह भी पाया गया कि नैतिक मूल्यों के बढ़ने से विद्यार्थियों की भावनात्मक नियंत्रण क्षमता एवं सामाजिक व्यवहार में सुधार होता है, जिससे उनकी समायोजन क्षमता और अधिक विकसित होती है।

**समस्या कथन**

माध्यमिक स्तर पर शहरी एवं ग्रामीण विद्यार्थियों के नैतिक मूल्यों का उनकी समायोजन क्षमता पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन।

**Objectives (उद्देश्य)**

1. माध्यमिक स्तर पर शहरी एवं ग्रामीण विद्यार्थियों के नैतिक मूल्यों की तुलना करना।

2. माध्यमिक स्तर पर शहरी एवं ग्रामीण विद्यार्थियों की समायोजन क्षमता की तुलना करना।

3. माध्यमिक स्तर पर शहरी एवं ग्रामीण विद्यार्थियों के नैतिक मूल्यों का उनकी समायोजन क्षमता पर पढ़ने वाले प्रभाव का अध्ययन करना।

**Hypotheses (परिकल्पनाएँ)**

1. माध्यमिक स्तर पर शहरी एवं ग्रामीण विद्यार्थियों के नैतिक मूल्यों में सार्थक अंतर नहीं पाया जाता।

2. माध्यमिक स्तर पर शहरी एवं ग्रामीण विद्यार्थियों की समायोजन क्षमता में सार्थक अंतर नहीं पाया जाता।

3. माध्यमिक स्तर पर शहरी एवं ग्रामीण विद्यार्थियों के नैतिक मूल्यों एवं समायोजन क्षमता में धनात्मक सहसंबंध पाया जाता है।

**Methodology (शोध विधि)**

इस अध्ययन में वर्णनात्मक शोध विधि का उपयोग किया गया है। अध्ययन का उद्देश्य विद्यार्थियों के नैतिक मूल्यों एवं उनकी समायोजन क्षमता के मध्य संबंध का विश्लेषण करना है। यह पद्धति सामाजिक एवं शैक्षिक समस्याओं के अध्ययन के लिए उपयुक्त मानी जाती है।

**Sample (नमूना)**

इस अध्ययन में कुल 200 विद्यार्थियों का चयन किया गया, जिनमें 100 ग्रामीण एवं 100 शहरी क्षेत्र के विद्यार्थी शामिल हैं।

**Tools (उपकरण)**

अध्ययन हेतु स्वनिर्मित प्रश्नावली का प्रयोग किया गया, जिसमें:

कुल 30 प्रश्न लिए गये।

उत्तर विकल्प: "हाँ" / "नहीं"

अध्ययन हेतु निम्नलिखित उपकरणों का प्रयोग किया गया—

1. नैतिक मूल्य मापन प्रश्नावली

2. समायोजन क्षमता मापन प्रश्नावली

**विश्वसनीयता:**

प्रश्नावली की विश्वसनीयता पुनः परीक्षण विधि द्वारा ज्ञात की गई, जिसमें $r = 0.82$ प्राप्त हुआ, जो उच्च विश्वसनीयता को दर्शाता है।

**वैधता:**

प्रश्नावली की वैधता विषय-वस्तु वैधता के आधार पर सुनिश्चित की गई, जिसमें विशेषज्ञों की राय ली गई। अतः प्रश्नावली वैध पाई गई।

**Data Collection (डेटा संग्रह)**

डेटा का संग्रह विद्यार्थियों से प्रत्यक्ष संपर्क एवं प्रश्नावली के माध्यम से किया गया।

**Statistical Technique (सांख्यिकीय तकनीक)**

प्राप्त आंकड़ों के विश्लेषण हेतु माध्य (Mean), मानक विचलन (SD) एवं t-परीक्षण का उपयोग किया गया।

**Analysis and Interpretation (विश्लेषण एवं व्याख्या)**

**तालिका–1**

**शहरी एवं ग्रामीण विद्यार्थियों के नैतिक मूल्यों की तुलना**

| क्र.सं. | समूह | N | मध्यमान (M) | SD | t-मूल्य | परिणाम |
|---|---|---|---|---|---|---|
| 1. | शहरी विद्यार्थी | 100 | 25.60 | 2.10 | | |
| 2. | ग्रामीण विद्यार्थी | 100 | 25.20 | 2.05 | 1.10 | स्वीकृत |

**t-परीक्षण सूत्र:**

$$t = x^1\text{-}x^2 \div \sqrt{SD_1^2/N_1 + SD_2^2/N_2}$$

**गणना (Calculation):**

Mean Difference = 25.60 − 25.20 = 0.40

$SD_1^2/N_1 = (2.10)^2 / 100 = 4.41/100 = 0.044$

$SD_2^2/N_2 = (2.05)^2 / 100 = 4.20/100 = 0.042$

$\sqrt{(0.044 + 0.042)} = \sqrt{0.086} \approx 0.29$

$t = 0.40 \div 0.29 \approx 1.10$

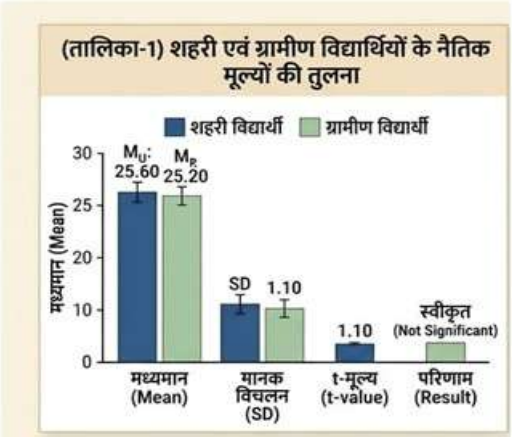


**(तालिका-1): शहरी एवं ग्रामीण विद्यार्थियों के नैतिक मूल्यों की तुलना**

**व्याख्या**

तालिका 1 और चित्र 1 के विश्लेषण से स्पष्ट होता है कि शहरी विद्यार्थियों का नैतिक मूल्य मध्यमान 25.60 और ग्रामीण विद्यार्थियों का 25.20 पाया गया है। इनके बीच का t-मूल्य 1.10 है, जो सांख्यिकीय रूप से 0.05 स्तर पर सार्थक नहीं है। इससे यह प्रमाणित होता है कि माध्यमिक स्तर पर शहरी एवं ग्रामीण विद्यार्थियों के नैतिक मूल्यों में कोई सार्थक अंतर नहीं है। :हमारी परिकल्पना–1 'शहरी एवं ग्रामीण विद्यार्थियों के नैतिक मूल्यों में सार्थक अंतर नहीं पाया जाता' स्वीकृत की जाती है।

**परिणाम (Result):**

प्राप्त t-मूल्य = 1.10 है, जो 0.05 स्तर पर आवश्यक मान (≈ 1.98) से कम है।

अतः अंतर सार्थक नहीं है।

**व्याख्या (Interpretation):**

शहरी एवं ग्रामीण विद्यार्थियों के नैतिक मूल्यों में अंतर बहुत कम है, जो सांख्यिकीय रूप से महत्वपूर्ण नहीं है।

**निष्कर्ष (Conclusion):**

अतः परिकल्पना–1 स्वीकृत की जाती है।

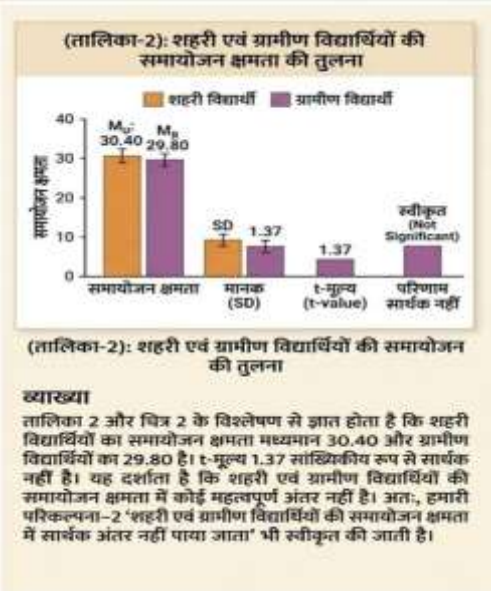


(तालिका-2): शहरी एवं ग्रामीण विद्यार्थियों की समायोजन की तुलना

**व्याख्या**

तालिका 2 और चित्र 2 के विश्लेषण से ज्ञात होता है कि शहरी विद्यार्थियों का समायोजन क्षमता मध्यमान 30.40 और ग्रामीण विद्यार्थियों का 29.80 है। t-मूल्य 1.37 सांख्यिकीय रूप से सार्थक नहीं है। यह दर्शाता है कि शहरी एवं ग्रामीण विद्यार्थियों की समायोजन क्षमता में कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं है। अतः, हमारी परिकल्पना–2 'शहरी एवं ग्रामीण विद्यार्थियों की समायोजन क्षमता में सार्थक अंतर नहीं पाया जाता' भी स्वीकृत की जाती है।

**तालिका–2**

**शहरी एवं ग्रामीण विद्यार्थियों की समायोजन क्षमता की तुलना**

| क्र.सं. | समूह | N | मध्यमान (M) | SD | t-मूल्य | परिणाम |
|---|---|---|---|---|---|---|
| 1. | शहरी विद्यार्थी | 100 | 30.40 | 3.20 | | |
| 2. | ग्रामीण विद्यार्थी | 100 | 29.80 | 3.00 | 1.37 | स्वीकृत |

**t-परीक्षण सूत्र:**

$t = x^1\text{-}x^2 \div \sqrt{SD_1^2/N_1 + SD_2^2/N_2}$

**गणना (Calculation):**

Mean Difference = 30.40 − 29.80 = 0.60

$SD_1^2/N_1 = (3.20)^2 / 100 = 10.24/100 = 0.102$

$SD_2^2/N_2 = (3.00)^2 / 100 = 9/100 = 0.09$

$\sqrt{(0.102 + 0.09)} = \sqrt{0.192} \approx 0.44$

$t = 0.60 \div 0.44 \approx 1.37$

**परिणाम (Result):**

प्राप्त t-मूल्य = 1.37 है, जो 0.05 स्तर पर आवश्यक मान (≈ 1.98) से कम है।

अतः अंतर सार्थक नहीं है।

**व्याख्या (Interpretation):**

दोनों समूहों की समायोजन क्षमता लगभग समान है।

**निष्कर्ष (Conclusion):**

अतः परिकल्पना–2 स्वीकृत की जाती है।

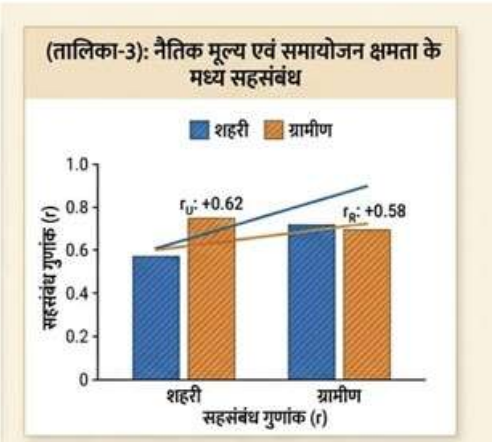


(तालिका-3): नैतिक मूल्य एवं समायोजन क्षमता के मध्य

**व्याख्या**

तालिका 3 और चित्र 3 के परिणाम बताते हैं कि शहरी विद्यार्थियों में नैतिक मूल्य और समायोजन क्षमता के मध्य सहसंबंध r = +0.62 और ग्रामीण विद्यार्थियों में r = +0.58 प्राप्त हुआ है। दोनों ही समूहों में यह धनात्मक सहसंबंध दर्शाता है, जो सांख्यिकीय रूप से महत्वपूर्ण है। इसका अर्थ है कि जैसे–कजैसे विद्यार्थियों के नैतिक मूल्य उच्च होते जाते हैं, उनकी समायोजन क्षमता भी बेहतर होती जाती है। अतः, हमारी परिकल्पना–3 'माध्यमिक स्तर पर ग्रामीण विद्यार्थियों के नैतिक मूल्यों एवं समायोजन क्षमता में धनात्मक सहसंबंध पाया जाता है' भी स्वीकृत की जाती है।

**तालिका–3**

**नैतिक मूल्य एवं समायोजन क्षमता के मध्य सहसंबंध**

| क्र.सं. | समूह | N | सहसंबंध गुणांक (r) | परिणाम |
|---|---|---|---|---|
| 1. | शहरी विद्यार्थी | 100 | +0.62 | धनात्मक सहसंबंध |
| 2. | ग्रामीण विद्यार्थी | 100 | +0.58 | धनात्मक सहसंबंध |

**परिणाम (Result):**

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट है कि शहरी विद्यार्थियों में r = +0.62 तथा ग्रामीण विद्यार्थियों में r = +0.58 प्राप्त हुआ है, जो दोनों ही स्थितियों में धनात्मक सहसंबंध को दर्शाता है।

**व्याख्या (Interpretation):**

इससे यह स्पष्ट होता है कि जैसे-जैसे विद्यार्थियों के नैतिक मूल्य बढ़ते हैं, वैसे-वैसे उनकी समायोजन क्षमता भी बढ़ती है।

**निष्कर्ष (Conclusion):**

अतः परिकल्पना–3 स्वीकृत की जाती है कि:

"माध्यमिक स्तर पर शहरी एवं ग्रामीण विद्यार्थियों के नैतिक मूल्यों एवं समायोजन क्षमता में धनात्मक सहसंबंध पाया जाता है।"

**परिणाम (Results):**

प्रस्तुत अध्ययन के विश्लेषण से यह ज्ञात हुआ कि विद्यार्थियों के नैतिक मूल्यों और उनकी समायोजन क्षमता के मध्य सार्थक एवं धनात्मक संबंध पाया जाता है। जिन विद्यार्थियों में नैतिक मूल्यों का स्तर उच्च पाया गया, उनमें सामाजिक, भावनात्मक तथा शैक्षणिक समायोजन की क्षमता भी अधिक विकसित पाई गई।

सांख्यिकीय विश्लेषण (जैसे सहसंबंध गुणांक) के आधार पर यह स्पष्ट हुआ कि नैतिक मूल्यों में वृद्धि के साथ समायोजन क्षमता में भी वृद्धि होती है। ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों के मध्य भी इस संबंध में समान प्रवृत्ति देखी गई, यद्यपि उनके स्तरों में हल्का अंतर पाया गया।

**निष्कर्ष :—**

• उच्च नैतिक मूल्य वाले विद्यार्थी तनावपूर्ण परिस्थितियों में बेहतर संतुलन बनाए रखते हैं।

• ऐसे विद्यार्थी सहपाठियों एवं शिक्षकों के साथ सहयोगात्मक व्यवहार प्रदर्शित करते हैं।

• निम्न नैतिक मूल्यों वाले विद्यार्थियों में समायोजन संबंधी कठिनाइयाँ अधिक पाई गईं।

अतः यह कहा जा सकता है कि नैतिक मूल्य, विद्यार्थियों की समायोजन क्षमता को सकारात्मक रूप से प्रभावित करते हैं।

**आभार (Acknowledgement)**

यह शोध कार्य शोधकर्त्री द्वारा शैक्षणिक उद्देश्य से किया गया है। इस कार्य को पूर्ण करने में मार्गदर्शक शिक्षक, सहपाठियों तथा परिवार के सदस्यों का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। शोधकर्त्री सभी के प्रति आभार व्यक्त करती है, जिनके सहयोग और मार्गदर्शन से यह कार्य सफलतापूर्वक पूर्ण हुआ।

**शैक्षिक निहितार्थ (Educational Implications) :**

इस अध्ययन के निष्कर्ष शिक्षा के क्षेत्र में अत्यंत महत्वपूर्ण निहितार्थ प्रस्तुत करते हैं। यह स्पष्ट होता है कि विद्यार्थियों के समुचित विकास के लिए केवल बौद्धिक शिक्षा पर्याप्त नहीं है, बल्कि नैतिक मूल्यों का विकास भी आवश्यक है।

विद्यालयों में ऐसी गतिविधियों को बढ़ावा देना चाहिए जो विद्यार्थियों में सत्यनिष्ठा, अनुशासन, सहयोग, सहिष्णुता एवं जिम्मेदारी जैसे मूल्यों का विकास करें। नैतिक शिक्षा को पाठ्यक्रम का अभिन्न अंग बनाना चाहिए, जिससे विद्यार्थियों की समायोजन क्षमता में सुधार हो सके।

शिक्षकों की भूमिका भी अत्यंत महत्वपूर्ण है। शिक्षक अपने व्यवहार एवं शिक्षण पद्धति के माध्यम से विद्यार्थियों के लिए आदर्श प्रस्तुत कर सकते हैं, जिससे नैतिक मूल्यों का प्रभावी संप्रेषण हो सके।

इसके अतिरिक्त—

• समूह कार्य (Group Activities) के माध्यम से सहयोग एवं समायोजन की भावना विकसित की जा सकती है।

• परामर्श (Counselling) सेवाओं के माध्यम से विद्यार्थियों की व्यक्तिगत समस्याओं का समाधान किया जा सकता है।

• अभिभावकों को भी नैतिक मूल्यों के विकास में सक्रिय भूमिका निभानी चाहिए।

अतः यह आवश्यक है कि शिक्षा प्रणाली में नैतिक मूल्यों को प्राथमिकता दी जाए, जिससे विद्यार्थियों का समग्र विकास हो सके और वे जीवन की विभिन्न परिस्थितियों में सफलतापूर्वक समायोजन कर सकें।

**ग्रंथ सूची (Bibliography)**

**हिंदी संदर्भ (Hindi References)**

1. शर्मा, आर. के. (2018). नैतिक मूल्यों का विकास एवं व्यवहार प्रबंधन. जयपुर: रावत पब्लिकेशन।

2. वर्मा, एस. (2019). शैक्षिक मनोविज्ञान. आगरा: विनोद पुस्तक मंदिर।

3. गुप्ता, एम. (2020). समायोजन क्षमता एवं उसका शैक्षिक उपयोग. नई दिल्ली: एपीएच पब्लिशिंग।

4. मिश्रा, डी. (2017). किशोरावस्था का मनोविज्ञान एवं नैतिक विकास. वाराणसी: भारतीय विद्या प्रकाशन।

5. चौधरी, आर. (2021). व्यवहार संशोधन की तकनीकें एवं समायोजन. दिल्ली: ज्ञानदीप प्रकाशन।

6. सिंह, ए. (2022). आधुनिक मनोवैज्ञानिक उपचार पद्धतियाँ. लखनऊ: शिक्षण प्रकाशन।

7. यादव, पी. (2016). सामाजिक मनोविज्ञान एवं समायोजन. इलाहाबाद: लोकभारती प्रकाशन।

8. तिवारी, के. (2019). शिक्षा में परामर्श एवं मार्गदर्शन. भोपाल: मध्यप्रदेश हिंदी ग्रंथ अकादमी।

9. कुमारी, नीतू (2018). विद्यालयी परामर्श एवं मानसिक स्वास्थ्य. पटना: विश्वविद्यालय प्रकाशन।

10. जोशी, एस. (2020). किशोरों की समस्याएँ, नैतिक मूल्य एवं समाधान. जयपुर: आर.बी.एस.ए. प्रकाशन।

11. शर्मा, एस. — शैक्षिक मनोविज्ञान, 2020, नई दिल्ली, प्रकाशन संस्थान।

12. गुप्ता, आर. — नैतिक शिक्षा, 2018, जयपुर, शिक्षा प्रकाशन।

13. National Council of Educational Research and Training (एनसीईआरटी) — विभिन्न कक्षाओं की पाठ्यपुस्तकें, नई दिल्ली।

14. नैतिक मूल्यों एवं समायोजन क्षमता से संबंधित विभिन्न शोध लेख एवं शैक्षणिक पत्रिकाएँ।